94

विश्वास करने में कठिनाई

बाइबल पाठ #42

VIII. यीशु का पुनरुत्थान, दर्शन और स्वर्गारोहण (क्रमशः)।
  क. रविवार: यीशु के पुनरुत्थान का दिन (क्रमशः)।
    1. खाली कब्र (क्रमशः)।
      ख. दो प्रेरित और खाली कब्र (लूका 24:12; यूहन्ना 20:1-10; देखें लूका 24:24)।
    2. पहली बार दिखाई देना: मरियम मगदलीनी को (मरकुस 16:9-11; यूहन्ना 20:11-18; देखें लूका 24:10)।
    3. दूसरी बार दिखाई देना: अन्य स्त्रियों को (मत्ती 28:9-11क; देखें आयतें 1, 5-8)।
    4. एक रिपोर्ट और एक झूठ (मत्ती 28:11-15)।
    5. तीसरी बार दिखाई देना: पतरस को (1 कुरिन्थियों 15:5; देखें लूका 24:34)।
    6. चौथी बार दिखाई देना: क्लियुपास और एक और को (मरकुस 16:12, 13; लूका 24:13-35)।

परिचय

क्या आपको विश्वास अर्थात परमेश्वर की किसी प्रतिज्ञा में सचमुच विश्वास करने में कठिनाई आई है?[1] उदाहरण के लिए, जब लगता है कि जीवन में सब कुछ गलत हो रहा है, तो क्या आपको यह विश्वास करना कठिन लगता है कि अन्त में परमेश्वर "सब बातें मिलाकर भलाई" (रोमियों 8:28) ही निकालेगा? यीशु के चेलों को वही समस्या आई थी, जो हम में से कइयों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं स्वीकार करने में आती है। मसीह ने अपने चेलों को बताया था कि वह मुर्दों में से जी उठेगा (मरकुस 8:31; 9:31), परन्तु वे उसकी बातें समझे नहीं (मरकुस 9:32; देखें यूहन्ना 20:9), उन्होंने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया। इस अध्ययन में,[2] हम प्रभु के चेलों के यह विश्वास करने की कठिनाई को देखेंगे कि वह सचमुच मरे हुओं में से जी उठा था।

कब्र पर (लूका 24:12; यूहन्ना 20:1-10)

पिछले अध्ययन के अन्त में, हमने सप्ताह के पहले दिन भोर को कब्र पर जाने वाली स्त्रियों की कहानी देखी थी (मत्ती 28:1-8; मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-11)। उनमें मरियम मगदलीनी भी थी (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1)। बीच में कहीं, वह दूसरी स्त्रियों से अलग हो गई थी। वह उनसे पहले कब्र पर पहुंच गई होगी और उनके पहुंचने से पहले वहां से आ गई।[3] यदि वह उनके पहुंचने के समय कब्र पर थी, तो शायद उसने सहायता के लिए भागने के समय उन्हें वहां रोका होगा।

जो भी हो, गाड़े जाने के स्थान पर पहुंचकर, उसने ''पत्थर को ... हटा हुआ देखा'' (यूहन्ना 20:1)। इससे भी बुरा होने की सोचकर, कब्र में देखने के लिए रुके बिना, वह पतरस और यूहन्ना के पास भाग गई (यूहन्ना 20:2क)।[4] उसने उन्हें बताया, ''वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रख दिया है'' (यूहन्ना 20:2ख)।

चौकस होकर पतरस और यूहन्ना बाग की ओर भागे (यूहन्ना 20:3, 4क; लूका 24:12क)। यूहन्ना, जो शायद जवान था, ''पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहिले पहुंचा'' (यूहन्ना 20:4ख; देखें आयत 8क)। दोनों ही स्त्रियों के वहां से जाने के बाद पहुंच गए (देखें मत्ती 28:8; लूका 24:9)।

यूहन्ना ने झुककर कब्र के अन्दर देखा (यूहन्ना 20:5क)। उसने ''मलमल की पट्टियां देखीं'' जिनमें यीशु की देह रखी गई थी; परन्तु चौकसी के कारण, ''वह भीतर न गया'' (यूहन्ना 20:5ख)। पतरस उसके पीछे ही आ गया (यूहन्ना 20:6क) और अपनी आदत के अनुसार तेज़ी से कब्र में चला गया। उसने ''कपड़े पड़े देखे और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं, बल्कि अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा'' (यूहन्ना 20:6ख, 7; देखें लूका 24:12ख)।[5]

पतरस का साहस देखकर, यूहन्ना भी कब्र के अन्दर आ गया और कपड़ों को देखकर उसने ''विश्वास किया'' (यूहन्ना 20:8)। खाली कब्र में कपड़ों के ढेर में ऐसा क्या था, जिससे उन्हें विश्वास हो गया? एक ओर तो, यदि *मित्रों* ने यीशु की लाश ले जाकर कहीं और गाड़ दी होती, तो उन्होंने लाश के कपड़े नहीं उतारने थे। दूसरी ओर, यदि *कब्रों के लुटेरे* उसकी लाश को चुरा ले गए थे, तो उनके पास पट्टियां उतारने के लिए समय नहीं होना था। निश्चय ही उन्होंने कपड़ों को सलीके से रखने या अंगोछे को अलग जगह पर रखने के लिए नहीं रुकना था। कफ़न का ऐसे रखे जाने का एक ही कारण था कि उन्हें मसीह ने किसी प्रकार अपनी ही सहमति से वहां रखा था। वह अवश्य जी उठा होगा!

बहुत से लेखक सुझाव देते हैं कि कपड़ों का इस प्रकार रखा जाना, यूहन्ना द्वारा विश्वास करने का एक कारण था। यदि यीशु उन कपड़ों और मसालों ''में से'' वैसे ही निकल गया जैसे वह बंद दरवाज़ों ''में से निकला'' था,[6] तो लाश के कपड़े वैसे ही पड़े होने थे।

> सिकुड़े हुए दरार पड़े रेशम के खोल की तरह, जिसमें से निकल कर कीड़ा उठ गया और सूरज की रोशनी में चला गया ... था, और अच्छी तरह से कहें, तो दस्ताने

की तरह जिस में से हाथ निकाल लिया गया है, जिसकी उंगलियां अभी भी हाथ के आकार की हैं।[7]

परन्तु यूहन्ना का विश्वास अभी भी संकोचभरा और अधूरा था। हम उसे उस पिता के साथ मिला सकते हैं, जो पुकार उठा था, ''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर'' (मरकुस 9:24)। वर्षों बाद यूहन्ना ने लिखा कि ''[वह और पतरस] तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझे थे कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा'' (यूहन्ना 20:9)। इन दोनों के ''अपने घर लौटते हुए'' (यूहन्ना 20:10), यूहन्ना ने कुछ हद तक ''विश्वास किया'' (यूहन्ना 20:8) जबकि पतरस ''जो हुआ था उससे'' अचम्भित था (लूका 24:12ग)।[8] तौ भी, वे यह नहीं समझे थे कि यह प्रभु की प्रतिज्ञा का पूरा होना था कि वह फिर से जी उठेगा।[9]

बाग में
(मरकुस 16:9-11; यूहन्ना 20:11-18; देखें लूका 24:10)

कब्र पर लौटने पर मरियम मगदलीनी को उम्मीद होगी कि पतरस और यूहन्ना के साथ स्त्रियां वहीं होंगी, परन्तु सब जा चुके थे। वह ''रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही'' (यूहन्ना 20:11क), वह अपने मित्र के खो जाने पर रो रही थी और इसलिए भी रो रही थी क्योंकि उसे अभिषेक करने का अवसर मिलने से पहले ही कोई उसकी लाश ले गया था।

मरियम ने कब्र के अन्दर झांककर नहीं देखा होगा। उसने ''कब्र की ओर झुककर दो स्वर्गदूतों को उज्जवल कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोथ पड़ी थी'' (यूहन्ना 20:11ख, 12)।[10] ''स्वर्गदूतों को वाचा पर करूब की तरह रखा गया था, जैसे कि मसीह की कब्र प्रायश्चित का नया ढकना हो।''[11] स्वर्गीय दूतों ने मरियम से कहा, ''हे नारी, तू क्यों रोती है?'' (यूहन्ना 20:13क)। उसने उत्तर दिया, ''वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है'' (यूहन्ना 20:13ख)।

तभी, मरियम ''पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा'' (यूहन्ना 20:14क)। मरकुस 16:9 के अनुसार, जी उठने के बाद यह यीशु का पहला दर्शन था। पहले तो मरियम ने ''न पहचाना कि यह यीशु है'' (यूहन्ना 20:14ख)। हमें नहीं मालूम कि उसने तुरन्त उसे क्यों नहीं पहचाना, हो सकता है कि जी उठने के बाद उसके शरीर में कुछ परिवर्तन आए हों।[12] शायद उसे इसलिए पता नहीं चला, क्योंकि उसे उसके बाग में खड़े होने की उम्मीद नहीं होगी।[13]

''यीशु ने उससे कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? किस को ढूंढ़ती है? उसने माली[14] समझकर उस से कहा, हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी'' (यूहन्ना 20:15)। अन्य शब्दों में, वह कह रही थी, ''मैं उसे शान से दफ़नाना चाहती हूं।'' उसने मसीह के अन्य मित्रों की सहायता की सूची बनाने की योजना भी बनाई थी।

यीशु ने ''मरियम'' को उसके नाम से पुकारकर उसकी उलझन दूर कर दी (यूहन्ना

20:16क)। उसके मुंह से अपना नाम सुनकर, अन्त में उसे पता चल गया कि वह कौन था। उत्तेजना से उसकी ओर मुड़ते हुए, उसने ''इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्थात हे गुरु'' (यूहन्ना 20:16ख)।

शायद यहां पर, बाद में दूसरी स्त्रियों की तरह, उसने उसके पांवों में गिरकर उसे ''पकड़ लिया'' (मत्ती 28:9)। स्पष्टतया उसने यीशु को ऐसे पकड़ा, जैसे वह कह रही हो, ''मैं दोबारा आपको नहीं जाने दूंगी!'' मसीह ने उससे कहा, ''मुझे मत छू[15] क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया''[16] (यूहन्ना 20:17क)। प्रभु उसे आश्वस्त कर रहा होगा कि वह अगले कुछ हफ्तों के दौरान फिर देखेगी और उसे छूने की आवश्यकता नहीं हुई। वह उसे यह भी समझा रहा होगा कि समय आने पर उसे किसी प्रकार पकड़कर पिता के पास ऊपर जाने से नहीं रोका जा सकेगा।[17]

उसने उसे यह आज्ञा दी, ''मेरे भाइयों के पास जाकर[18] उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं''[19] (यूहन्ना 20:17ख)। उसने उसे उन्हें यह बताने के लिए नहीं कहा कि वह जीवित है (उसे मालूम था कि यह बात वह उन्हें बता देगी [यूहन्ना 20:18]); बल्कि उसने उन्हें यह बताने के लिए कहा कि वह अपने पिता के पास ऊपर जाने को तैयार है। शायद वह इन शब्दों से अपने संदेश की प्रमाणिकता के रूप में काम करवाना चाहता था, क्योंकि प्रेरितों को अन्तिम संदेश के दौरान पिता के पास उसकी वापसी एक बड़ा विषय था (यूहन्ना 14:2–4, 12, 28; 16:5, 7, 10, 28)।

आनन्द से भरी हुई, ''उस ने जाकर उसके साथियों को, जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया'' (मरकुस 16:10; देखें लूका 24:10[20])। मैं उन्हें बताते हुए उसकी आवाज़ में उत्तेजना ''मैंने प्रभु को देखा है,'' और जो कुछ उसने उससे कहा था, उसे दोहराते हुए (यूहन्ना 20:18) सुन सकता हूं। परन्तु उन्होंने उसका विश्वास करने से इनकार कर दिया (मरकुस 16:11)।

मार्ग में (मत्ती 28:9-11क)

मसीह का दूसरा दर्शन ''जा रही'' दूसरी स्त्रियों को दिया गया (मत्ती 28:11)। हमारे पिछले अध्ययन की समाप्ति पर, स्त्रियों ने बड़े आनन्द से कब्र पर से भागकर यीशु के चेलों को स्वर्गदूत की बातें बताई थीं (मत्ती 28:8; देखें लूका 24:9, 10, 22, 23)। परन्तु चेलों को उनका संदेश ''कहानी सा जान पड़ा'' था (लूका 24:11)।

चेलों के पास जाते या उनके पास से आते समय,[21] ''यीशु [स्त्रियों को] मिला, और कहा; 'सलाम' '' (मत्ती 28:9क)। वे उसके सामने गिर गईं ''और उसके पांव पकड़कर उसको दण्डवत किया'' (मत्ती 28:9ख)। यीशु ने उनसे कहा, ''मत डरो'' (मत्ती 28:10क)। फिर उसने गलील में अपने भाइयों के मिलने के बारे में स्वर्गदूत की बात दोहराई (मत्ती 28:10ख)।[22]

नगर में (मत्ती 28:11-15)

स्त्रियों को मसीह के दर्शन देने के समय, ''पहरुओं [जो कब्र की रखवाली कर रहे थे] में से कितनों ने नगर में आकर पूरा हाल महायाजकों से कह सुनाया'' (मत्ती 28:11ख)।[23] मैं शिकायत की बातें सुनने की कल्पना कर सकता हूं, ''अरे, हमें भूकम्प, स्वर्गदूतों और गायब हुई लाश के बारे में किसी ने चौकस नहीं किया!''

हम सोच सकते हैं कि निश्चय ही *अब* यहूदी अगुवे यीशु के मसीहा होने के दावे पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे। इसके बजाय उनकी एकमात्र दिलचस्पी (आधुनिक वाक्यांश का इस्तेमाल करें तो) ''नुकसान पर नियन्त्रण'' रखने में थी। कब्र को सुरक्षित रखने के अपने भरसक प्रयासों के बावजूद (मत्ती 27:65), यह अब खाली थी। जिस कारण वे घबराए हुए थे। कोई भी वहां जाकर अन्दर देख सकता था। इस तथ्य के लिए कि यीशु की लाश वहां नहीं थी, वे क्या सफ़ाई दे सकते थे?[24]

अन्त में उन्होंने अफ़वाह उड़ाने का फैसला किया कि यीशु के चेले उसकी लाश को चुरा ले गए हैं। महायाजकों और पुरनियों ने ''सिपाहियों को बहुत चान्दी देकर कहा कि यह कहना कि रात को जब हम सो रहे थे तो, उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए'' (मत्ती 28:12, 13)। उस समय यह उपहासपूर्ण कहानी थी और आज भी उपहासपूर्ण कहानी है। रॉबर्ट थोमस और स्टैनली गुंडरी ने इसकी व्याख्या की है:

> महासभा द्वारा बनाई गई कहानी के बेतुके पन ... से उस निराशा का पता चलता है जो हाल ही की घटनाओं से उनमें आई थी। निश्चय ही चेलों द्वारा कब्र से पत्थर हटाने से इतना शोर तो होता ही कि कम से कम एक सिपाही को अवश्य पता चल जाता। इसके अलावा यदि सिपाही सो रहे थे तो उन्हें यह कैसे पता चल गया कि लाश चेलों ने ही चुराई थी।[25]

सिपाहियों ने यहूदी अधिकारियों को याद दिलाया होगा कि ड्यूटी पर सोना उनके लिए मृत्युदण्ड का कारण बन सकता है (देखें प्रेरितों 12:18, 19; 16:27)। परन्तु, अगुओं ने उन्हें आश्वस्त किया कि ''... यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे'' (मत्ती 28:14)।

आश्वासन पाकर, सिपाहियों ने ''रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे; वैसा ही किया'' (आयत 15क)। ''सबक छोटा और आसान था; प्रतिफल, बड़ा और चाहने योग्य था।''[26] रिचर्ड रोजर्स राईली ने लिखा है कि ''वही झूठ आज नि:शुल्क बताया जाता [है]।''[27]

मत्ती ने इसमें जोड़ा है कि ''यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है'' (आयत 15ख) जो साठ के दशक की बात होगी। ''ट्रायफो के साथ अपने वार्तालाप में, जो लगभग 170 ईस्वी में लिखा गया, जस्टिन मार्टिन कहता है कि यहूदियों ने हर देश में विशेष दूतों के माध्यम से यह कहानी फैला दी।''[28]

खाली कब्र ''की सफाई'' देने का यह पहला प्रयास था। ''बीस शताब्दियों से खाली

कब्र का कारण बताने के प्रयास किए जा रहे हैं, जो पहले किए गए प्रयासों की तरह ही व्यर्थ हैं। [खाली कब्र के लिए] एक मात्र व्याख्या यह है कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिला दिया।''[29]

एक अज्ञात स्थान (1 कुरिन्थियों 15:5क; देखें लूका 24:34)

इसके बाद यीशु ने पतरस को दर्शन दिया होगा, जो अभी भी कब्र पर देखे गए दृश्य से अचम्भित होगा (लूका 24:12)। मसीह के पुनरुत्थान के दर्शनों की सूची देते हुए पौलुस ने पहले यही कहा कि ''कैफा को ... दिखाई दिया'' (1 कुरिन्थियों 15:5) इस अध्ययन के अगले भाग में हम चेलों के यह कहने को देखेंगे, ''प्रभु सचमुच जी उठा है और शमौन को दिखाई दिया है'' (लूका 24:34)। परन्तु इस दर्शन के विवरण मालूम नहीं हैं। ''यह बाइबल की महान अनकही कहानियों में से एक है: उसे विशेष दर्शन, जिसने उसका इनकार किया था!'' जॉन कार्टर ने लिखा है:

> यदि शमौन पतरस ने किसी को बताया हो कि जी उठे प्रभु को उसके मिलने पर क्या हुआ, ... तो वह लिखा नहीं गया है। उसके लिए यह अनुभव शायद इतना पवित्र था कि किसी को बताया नहीं जा सकता था और यदि उस भेंट के पास-पास परदा गिरा हुआ है तो हम उसे न उठाएं तो अच्छा रहेगा। परन्तु मुझे आश्चर्य है कि पश्चात्तापी चेले को प्रेरितों में फिर से अपना स्थान लेने और वहां जाने के लिए कैसे कहा, जहां वे ठहरे हुए थे। कुछ देर बाद यीशु द्वारा उन पर प्रकट होने के समय लगता है कि वह वहीं था।[30]

रास्ते में (मरकुस 16:12, 13; लूका 24:13-35)

कम से कम पुनरुत्थान का एक और दर्शन यीशु के मुर्दों में से जी उठने के दिन हुआ।[31] वह चेलों को दिखाई दिया जो ''उसी दिन [जिस दिन स्त्रियां कब्र पर गई थीं; लूका 24:1] जब वे इम्माउस नामक एक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी पर था''[32] (लूका 24:13; देखें मरकुस 16:12)। एक चेले का नाम क्लियोपास था (लूका 24:18) जबकि दूसरे का परिचय नहीं दिया गया है।[33] इन दोनों को दिए गए मसीह के दर्शन का विवरण दूसरों को दिए गए दर्शनों से अधिक विस्तार में है।

लूका 24 हमें बताता है कि क्लियोपास और उसका साथी यरूशलेम में हुई घटनाओं के बारे में बातें कर रहे थे (आयत 14)। मसीह उनके साथ-साथ चलने लगा (आयत 15), ''परन्तु उन की आंखें ऐसी बन्द कर दी गई थीं, कि उसे पहिचान न सके'' (आयत 16)। हो सकता है कि परमेश्वर ने उन्हें यीशु को पहचानने से रोक रखा हो; क्या पता उदासी के कारण उनकी आंखें बंद हों (आयत 17ख)।

मसीह ने पूछा कि वे क्या चर्चा कर रहे हैं (आयत 17क)। क्लियोपास ने खाली कब्र देखकर आने वालों की बातें (आयतें 22-24) और पिछले तीन दिनों में, जो कुछ हुआ था उस सब का हाल सुनाया (आयतें 18-20)। यह कहते हुए कि ''परन्तु हमें आशा थी कि

यही इस्राएल को छुटकारा देगा,[34] और इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है'' (आयत 21), उसका गला भर आया होगा। जब मैं और आप ''तीसरे दिन'' वाक्यांश का इस्तेमाल करते हैं, तो हम यीशु की उस प्रतिज्ञा की बात कर रहे होते हैं कि वह ''तीसरे दिन जी उठेगा'' (मत्ती 17:23)। क्लियोपास के कहने का अर्थ इतना ही था कि ''काफ़ी समय बीत गया है और अब हमें उम्मीद नहीं रही है!''

यीशु ने उत्तर दिया, ''हे निर्बुद्धियो, और भविष्यवक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो! क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?'' (लूका 24:25, 26)। उन्हें यह समझ होनी चाहिए थी कि परमेश्वर की योजना में क्रूस एक आवश्यक भाग था, यानी मसीह की मृत्यु से परमेश्वर के उद्देश्य बेकार नहीं हुए थे, बल्कि वास्तव में वे दृढ़ हुए थे।

''तब [यीशु] ने मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया'' (आयत 27)। उसने क्लियोपास और उसके साथी को पुराने नियम का विस्तारपूर्वक अध्ययन करवाया। उसने मसीहा के विषय में की गई तीन सौ से अधिक भविष्यवाणियों की ओर उनका ध्यान दिलाया होगा। बाद में दोनों ने कहा कि ''जब वह मार्ग में [उन] से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ [उन्हें] समझाता था'' तो क्या उनके मन में उत्तेजना उत्पन्न न हुई? (आयत 32)।

इम्माउस में पहुंचने पर अभी अंधेरा ही था (आयत 29)। क्लियोपास और उसके मित्र ने यीशु को उनके साथ रुकने के लिए कहा (आयतें 28, 29)। जब वे खाने के लिए बैठे, तो मसीह ने खाने के लिए धन्यवाद दिया (आयत 30)। उसके प्रार्थना करते ही, ''उन की आंखें खुल गईं; और उन्होंने उसे पहचान लिया'' (आयत 31क)। उसे जानने में जिस भी बात ने उन्हें रोके रखा था,[35] अब वह हटा ली गई थी। बाद में उन्होंने यह संकेत दिया कि ''उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना'' (आयत 35ख)। शायद उसके प्रार्थना करने के निराले ढंग से उनके दिमाग में आ गया था। उन्होंने उसे अब जी उठे प्रभु के रूप में पहचान लिया था! परन्तु उनके पहचानते ही, ''वह उन की आंखों से छिप गया'' (आयत 31ख)!

यद्यपि देर हो चुकी थी, पर उन्होंने ''मार्ग की बातें'' (आयत 35) ''उन ग्यारहों[36] और उन के साथियों को'' (आयत 33; देखें मरकुस 16:13क) बताने के लिए यरूशलेम वापस जाने में जल्दी की। वहां पहुंचकर उन्होंने देखा कि एक गरमा-गरम चर्चा चल रही थी। कुछ कह रहे थे, ''प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमौन को दिखाई दिया है'' (लूका 24:34), परन्तु दूसरों को संदेह था। क्लियोपास और उसके साथी ने अपनी कहानी बताई, ''परन्तु उन्होंने उन की भी प्रतीति न की'' (मरकुस 16:13)।[37] प्रभु के चेलों को लगातार विश्वास में कठिनाई आती रही (मरकुस 16:14)।[38]

सारांश

यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि प्रेरितों को यीशु के मुर्दों में से जी उठने की उम्मीद नहीं थी और उसके जी उठने के बाद उन्हें विश्वास करने में बड़ी कठिनाई आई थी। ''फिर भी

यही वे लोग हैं, जिन पर यहूदियों ने पुनरुत्थान की कहानी का आविष्कार करने का आरोप लगाया था!''[39] थॉमस और गुंडरी ने टिप्पणी की है:

> खाली कब्र की बात सुनने के बाद भी यीशु के अनुयायियों की उदासी और निराशा से पता चलता है कि यह बात कितनी उपहासपूर्ण है कि उन्होंने यीशु के जी उठने की कहानी बनाई। उनकी मन की स्थिति ऐसे किसी भी काम को करने की सम्भावना के बिल्कुल विपरीत थी।[40]

''जी उठे प्रभु का पहला मुख्य कार्य अपने ही चेलों को विश्वास दिलाना था कि वह फिर जी उठा है।''[41] अगले पाठ में, हम देखेंगे कि यीशु प्रेरितों को सामूहिक रूप में कई बार दिखाई दिया और अन्त में उनके विश्वास की समस्या को सुलझाया।

टिप्पणियां

[1]क्लास में यह अध्ययन आरम्भ करने का एक ढंग अपने छात्रों से परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं को मानने की कोशिश के उदाहरण बताने के लिए है। [2]दो भागों वाले पाठ का यह दूसरा भाग है। [3]यूहन्ना 20:1 कहता है कि मरियम ''भोर को *अंधेरा रहते ही* कब्र पर आई'' और मरकुस 16:2 कहता है कि स्त्रियां ''बड़े भोर *जब सूरज निकला ही था,* ... कब्र पर आईं,'' जिस कारण कुछ लोगों का विचार है कि मरियम भागकर आगे निकल गई और दूसरों से पहले कब्र पर पहुंच गई। दूसरों का विचार है कि सभी स्त्रियां कब्र की ओर ''अंधेरा रहते ही'' *निकलीं* और ''सूरज निकलने'' के थोड़ी देर बाद *पहुंच गईं*। इतने विस्तार की आवश्यकता नहीं है। [4]एक बार फिर, हम यह मानते हैं कि यूहन्ना ने ''वह चेला जिससे यीशु प्रेम रखता था'' अपने लिए ही कहा। यह सम्भव है, परन्तु लगता नहीं कि मरियम मगदलीनी कब्र पर जाते हुए रास्ते में इन दोनों को मिली हो। वह सम्भवतया उस स्थान या स्थानों पर गई जहां पतरस और यूहन्ना यरूशलेम में रह रहे थे (देखें यूहन्ना 20:10)। यदि यह बात है तो पतरस वहां नहीं ठहरा होगा, जहां दूसरे प्रेरित थे (देखें लूका 24:12)। यीशु का इनकार करने के बाद, शायद पतरस दूसरे चेलों को मुंह नहीं दिखाना चाहता था। [5]वह स्वर्गदूत कहां था, जो उन स्त्रियों को दिखाई दिया था और बाद में मरियम को दिखाई दिया? हम नहीं बता सकते। शायद परमेश्वर प्रेरितों के साथ उन स्त्रियों को अलग ढंग से बताना चाहता था। [6]इस पुस्तक में ''यीशु की जी उठी देह'' पाठ में यीशु की जी उठी देह पर लेख भी देखें। [7]पीटर मार्शल, *मि. जोन्स, मीट द मास्टर* (न्यू यॉर्क: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1950), 110. [8]बाद में उस दिन, पतरस और यूहन्ना ने जो कुछ उनके साथ हुआ था, दूसरे चेलों को बताया होगा (देखें लूका 24:24)। [9]कुछ लेखक इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि चेलों ने *पहले* जी उठना देखा और फिर *बाद में* समझे कि यीशु के यह कहने का क्या अर्थ था कि वह फिर जी उठेगा। ये लेखक दावा करते हैं कि *उम्मीद* ने प्रेरितों को जी उठे प्रभु को देखने की *कल्पना* नहीं की। [10]निश्चय ही उसने भी वही कफ़न देखा जो पतरस और यूहन्ना ने बाद में देखा था, परन्तु उसने उनके महत्व को नहीं समझा होगा।

[11]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 743. [12]इस पुस्तक में आगे ''यीशु की जी उठी देह'' लेख देखें। [13]आयत 16 का संकेत है कि उसने उसे केवल एक नज़र से देखा और फिर नज़रअन्दाज़ कर दिया। [14]अरिमतियाह का यूसुफ धनवान था जिस कारण, उसके सेवक होंगे, जिसमें यूसुफ की कब्र के बाग की

देखभाल के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति भी होगा। [15]KJV और हिन्दी में ''मुझे मत छू'' है, परन्तु ''[यूनानी] क्रिया का काल और संकेत जो किया जा रहा है उसको करना बन्द करना है'' (राबर्ट डंकन कल्वर, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976], 270)। [16]मृत्यु के समय, वह अधोलोक के संसार (प्रेरितों 2:31), ''स्वर्गलोक'' (लूका 23:43) में गया था। वह अभी स्वर्ग में नहीं गया था। [17]''मुझे मत छू'' के शब्दों से कुछ विवाद खड़ा हुआ है, क्योंकि यीशु ने दूसरों को उसे छूने दिया था (मत्ती 28:9; लूका 24:39; यूहन्ना 20:27)। मरियम को यीशु की चेतावनी इसलिए हो सकती है कि वह हिम्मत न हार दे। [18]कुछ लोगों का विचार है कि यीशु अपने प्रेरितों के बजाय अपने सांसारिक भाइयों की बात कर रहा था, परन्तु मरियम ने समझा कि इसका अर्थ प्रेरितों के लिए है; और वह उनके पास चली गई (यूहन्ना 20:18)। मैक्गर्वे ने लिखा है, ''यह पहली बार है जब प्रभु द्वारा अपने चेलों के लिए 'भाइयों' शब्द का इस्तेमाल किया गया'' (मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 745)। देखें इब्रानियों 2:11. [19]ध्यान दें कि यीशु ने ''हमारे पिता'' या ''हमारे परमेश्वर'' नहीं कहा। परमेश्वर पिता के साथ, उसका सम्बन्ध प्रेरितों से अलग था। [20]स्पष्टतया लूका 24:10 में लूका ने मरियम और अन्य स्त्रियों की बताई गई बातों को मिला दिया।

[21]मत्ती के वृत्तांत से लगता है कि यीशु स्त्रियों को उस समय दिखाई दिया जब वे स्वर्गदूत द्वारा उन्हें बताई गई बातें चेलों को बताने के लिए उनके पास जा रही थीं (मत्ती 28:5-10)। परन्तु जब क्लियोपास ने अपने जाने की बात चेलों को बताई, तो उसने केवल यही बताया कि स्त्रियों ने स्वर्गदूतों को देखा था (लूका 24:22, 23), न कि यह कि उन्होंने प्रभु को देखा था। इससे यह संकेत मिल सकता है कि यीशु उन स्त्रियों को तब दिखाई दिया जब वे वहां *जा रही* थीं, जहां चेले ठहरे हुए थे। [22]हो सकता है कि स्त्रियां चेलों के पास *दूसरी* बार गई हों-इस बार यह बताने के लिए कि उन्होंने सचमुच जी उठे प्रभु को देखा है। [23]शायद ऊंचे पद वाले सिपाहियों ने (जो इंचार्ज थे और उनकी ज़िम्मेदारी थी) प्रधान याजकों को जाकर बताया, जब कि छोटे पद वाले सिपाही बैरकों में वापस लौट गए। [24]जहां मैं रहता हूं, वहां हम कहेंगे, ''वे तथ्य पर कौन सा *परदा* डाल सके कि कब्र खाली है?'' [25]राबर्ट एल. थॉमस, सं., एण्ड स्टैनली एन गुंडरी, सह. सं., *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1978), 256. [26]मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 747. [27]रिचर्ड रोजर्स, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट एण्ड हिज़ टीचिंग* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसेट इंटरनैशनल बाइबल इंस्टीट्यूट एक्सटरनल स्टडीज़ डिपार्टमैंट, 1995), 104. [28]मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 747. यह मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 108 की बात है। [29]थॉमस एण्ड गुंडरी, 256. [30]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्राडमैन प्रैस, 1961), 351.

[31]एक और दर्शन उस दिन से थोड़ा मेल खाता था: यीशु ने क्लियोपास और उसके साथी को दिखाई देने के थोड़ी देर बाद ग्यारह को दर्शन दिया। यूहन्ना के अनुसार, जिसने रोमी समय का इस्तेमाल किया, यह दर्शन भी ''पहले दिन'' ही था (यूहन्ना 20:19)। अगले पाठ में मैं इसके बारे में अधिक बात करूंगा। [32]इम्माउस की सम्भावित भौगोलिक स्थिति के लिए देखें ''यीशु के समय पलिश्तीन'' का मानचित्र-इसकी स्थिति के बारे में सुनिश्चित हों। [33]यह क्लियोपास का पुत्र, मित्र , या क्लियोपास की पत्नी हो सकते हैं। [34]अभी तक उनके मन में ''इस्राएल के छुटकारे'' का अर्थ रोमी दमन से उस जाति को बचाना था। इस समझ के बावजूद, क्लियोपास के शब्दों में यह आशा थी कि यीशु वही मसीहा था, जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे-और वह आशा उसके क्रूस पर चढ़ाने से खत्म हो गई। [35]इस पाठ में लूका 24:16, 17 पर पहले दिए नोट्स देखें। [36]''ग्यारहों'' प्रेरितों के लिए इस्तेमाल किया गया सामान्य शब्द। क्योंकि उस समय वहां थोमा नहीं था (यूहन्ना 20:24), इसका अर्थ यह है कि बचे हुए ग्यारह प्रेरितों में से सभी वहां नहीं थे। [37]घटनाओं की मेरी संरचना लूका 24:34 के साथ मरकुस 16:13, 14 को मिलाने का एक ढंग है। [38]जैसा कि हम अगले पाठ में देखेंगे, जब इसके तुरन्त बाद यीशु प्रेरितों को दिखाई दिया, तो उन्हें लगा कि वह कोई भूत है (लूका 24:37)। [39]मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 742. [40]थॉमस एण्ड गुंडरी, 256.

[41]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 225.